ISSN: 0973-0583

# कस्तुरबा गाँधी आवासीय विद्यालय-मूल्यांकन का एक सार्थक प्रयास

**कुमार रंजन**
**शोधार्थी, शिक्षा संकाय, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार**

**प्रो० अभय कुमार सिंह**
**विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, आर. एन. महाविद्यालय, हाजीपुर, बिहार**

## सार

कस्तुरबा गाँधी आवासीय विद्यालय भारत में महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से स्थापित किए गए है। यह विद्यालय कस्तुरबा गाँधी के योजना और सपनों के आधार पर बनाया गया है, जिन्होने महिला शिक्षा को महत्वपूर्ण माना था। इन विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को शिक्षित बनाना और समृद्ध की ओर अग्रसर करना है। कस्तुरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों का संचालन विभिन्न भागों में किया जाता है और इनमें महिलाओं को उच्च शिक्षा के लिए योग्य बनाने के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम और सुविधाएँ प्रदान की जाती है। ये विद्यालय भारत के विभिन्न राज्यों में स्थित है और महिलाओं को शिक्षा और सामाजिक समृद्धि के माध्यम से सशक्त बनाने का सार्थक प्रयास है। कस्तुरबा गाँधी के प्रेरणा स्त्रोत पर आधारित इन आवासीय विद्यालयों में शिक्षिका और छात्राएँ गाँधी जी के विचारों और आदर्शो के प्रति समर्पित है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में काम करते हैं। ये विद्यालय महिलाओं के शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बालिकाओं में समग्र विकास और गुणवतापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि पाठचर्या के साथ-साथ सह पाठचर्या की भी प्रशिक्षण दी जाय। यह बालिकाओं के व्यक्तिगत विकास एवं आत्म विश्वास बढ़ाने में सहायक होगा। कस्तुरबा बालिका विद्यालयों की छात्राएँ में छीजन दर बहुत ज्यादा है क्योंकि ये छात्राएँ अलग-अलग अनुभव के साथ-साथ अलग-अलग अधिगम स्तर की होती है इसलिए एक बिज कोर्स का संचालन होना चाहिए ताकि वे राज्य के पाठ्यक्रम को आत्मसात कर सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पाठ्यक्रम में जीवन कौशल शिक्षा होना चाहिए। सभी प्रमुख दस जीवन कौशल जैसे-आत्म जागरूकता सहानुभूति, प्रभावी संचार, पारस्परिक संबंध, महत्वपूर्ण सोच, निर्णय क्षमता, समस्या समाधान, भावनाओं के साथ नकल, तनाव प्रबंधन की पढ़ाई, वर्तमान समय में सामाज के अनुरूप होना चाहिए जो अभी तक अपेक्षित है। करीब दो दशक से संचालित कस्तुरबा बालिका विद्यालय अपने उद्देश्यों को सफलता पूर्वक प्राप्त करने में असफल रहा है। शैक्षिक समस्याओं व प्रशासनिक समस्याओं, शैक्षिक अवगुण को दूर किये बिना कस्तुरबा बालिका विद्यालय अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो सकता।

**मुख्य शब्दः** विद्यालय, अवगुण, शैक्षिक, शिक्षण और विद्यालय

भारत देश के दूर दराज ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा दर बहुत कम है। ग्रामीण क्षेत्रों के अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ी जाति व अल्पसंख्यक वर्ग के बालिकाओं की शिक्षा के लिए भारत सरकार ने एक नई योजना की शुरूआत की है। इस योजना का नाम भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की पत्नी 'कस्तुरबा गाँधी' के नाम पर 'कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय' रखा गया है। यह योजना भारत सरकार द्वारा बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से चलायी जानेवाली प्रमुख योजनाओं मे से एक है। इस योजना की प्रारम्भ भारत सरकार द्वारा 2004 में किया गया था। यह योजना गरीब बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से की गई है। जिसमें मुख्य रूप से उन छात्राओं पर विशेष घ्यान दिया जाता है जिनकी आयु 10 वर्ष से अधिक है और जिन्होंने ने या तो अभी तक किसी विद्यालय में प्रवेश नहीं किया है या किसी कारणवश विद्यालय बीच में ही छोड़ दिया है।

वर्तमान समय में इस योजना के तहत अनुसूचित जाति,अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक समुदाय और गरीबी रेखा से नीचे की लड़कियों को मुफ्त छात्रावास की भी सुविधा दी जाती है। उन क्षेत्रों में भी विद्यालय खोले गये हैं जहाँ से बालिकाओं को

एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए यातायात का कोई साधन नहीं है।

**कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय के उद्देश्य**

1. अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ी वर्ग, अल्पसंख्यक वर्ग और गरीबी रेखा के नीचे की सभी बालिकाओं को शिक्षा का अधिकार प्रदान करना, इस योजना के अन्तर्गत ऐसी बालिकाओं को शिक्षा का अधि कार प्राप्त होता है जिनके पास अधिकारिक शिक्षा के लिए सामाजिक और आर्थिक संबंध प्राप्त करने की कठिनाइयाँ हो सकती है।

2. बालिकाओं की शिक्षा को प्राथमिकता देना इस योजना के तहत ऐसी बालिकाओं पर मुख्य रूप से ध्यान देना है जिन्होंने किसी विद्यालय में प्रवेश नहीं लिया हो या किसी कारण विद्यालय बीच में ही छोड़ दिया है तथा जिनकी उम्र 10 वर्ष से ऊपर हो।

3. अनाथ बालिकाओं और कामकाजी बालिकाओं को मुफ्त में रहने, खाने और पढ़ने की सुविधा प्रदान करना है।

4. गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करना कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालयों में छात्राओं को गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिलता है, जिससे उनकी जीवन की गुणवत्ता बढ़ती है और अपने क्षेत्र में समृद्धि कर सकती है।

5. सामाजिक और आर्थिक स्वावलंबन इस योजना के माध्यम से बालिकाएँ सामाजिक और आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनती है, जिससे उनके और उनके परिवार के जीवन की स्थिति में सुधार होता है।

6. बालिकाओं को पुस्तकें स्कूल यूनिफार्म, स्वेटर, जूते मोजे आदि भी मुफ्त में उपलब्ध करवाना।

7. अभिभावकों को प्रोत्साहित करना ताकि वे अपने बालिकाओं को विद्यालय भेज सकें।

**कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय का कार्य क्षेत्र**

1. उन ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ अनुसूचित जाति, जनजाति, अल्पसंख्यक तथा पिछड़े वर्गो की बालिकाएँ किसी विद्यालयों में प्रवेश नहीं हो रही है वहॉ पर कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय खोले जा रहे हैं।
2. जिन क्षेत्रों में बालिकाओं की साक्षारता का प्रतिशत कम है उन सभी क्षेत्रों में भी विद्यालय खोले गये।
3. उन ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ आने-जाने की सुविधा न हो वहाँ विद्यालय खोले गये।
4. उन क्षेत्रों में जहाँ आवासीय विद्यालय नहीं है उन क्षेत्रों में भी विद्यालय स्थापित किए गए।
5. इन विद्यालयों में 75 प्रतिशत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े और अल्पसंख्यकों की बालिकाओं के लिए आरक्षित है और 25 प्रतिशत स्थान गरीबी रेखा से नीचे किसी भी वर्ग की बालिकाओं के लिए आरक्षित है।

**कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय के गुणः-**

1. यह विद्यालय 2004 में शुरू की गई है और 10 वर्षो के अन्दर 3600 विद्यालयों को स्थापित किया गया है।

2. इन विद्यालयों में बालिकाओं के लिए मुफ्त शिक्षा, मुफ्त छात्रावास, मुफ्त यूनीफार्म और मुफ्त भोजन और मुफ्त पाठ्य-पुस्तकों आदि की उचित व्यवस्था की गयी है।

3. इसके अन्तगर्त अनुसूचित जाति की 30 प्रतिशत, जनजाति की 25 प्रतिशत, पिछड़े वर्ग की 30 प्रतिशत, अल्पसंख्यक वर्ग की 7 प्रतिशत गरीबी रेखा से नीचे की 8 प्रतिशत बालिकाएँ इसका लाभ उठा सकते है।

4. इस योजना के द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग की बालिकाओं को शिक्षा सर्वसुलभ हो रही है जिससे शिक्षा का सार्वभौमिकरण हो रहा है।

**कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय के दोष**

1. इस योजना में सामान्य जाति के व्यक्तियों के बच्चों के लिए किसी भी प्रकार की कोई व्यवस्था नहीं की गई है अथवा वे इन विद्यालयों में प्रवेश नहीं ले सकती है। यह शैक्षिक अवसादों की समानता के सिद्धान्त के विरूद्ध है।
2. इन विद्यालयों में योग्य शिक्षक शिक्षिकाओं की कमी है। छात्रावासों में न नहाने का अच्छा प्रबंध है और न ही पौष्टिक भोजन की उचित व्यवस्था है।

3. यह योजना भी धीरे-धीरे लापरवाही व लालफीताशाही का शिकार हो रही है।
4. यह विद्यालय पिछड़े और जातिगत आधार पर बालिकाओं के लिए ठीक है, किन्तु सामान्य वर्ग को इस विद्यालय से कोई लाभ नहीं मिलता है।
5. अधिकांश विद्यालयों में समुचित प्रयोगशाला एवं सामग्री/उपकरण की सुविधा नहीं है।
6. अधिकांश विद्यालयों में कम्प्युटर प्रयोगशाला की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है।
7. अधिकांश विद्यालयों में या तो पुस्तकालय नहीं है और अगर है भी तो उनमें संदर्भ की पुस्तके नहीं है। पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकों का घोर अभाव है।
8. अधिकांश विद्यालयों में चिकित्सा की सुविधा नहीं है। छात्रों को इससे घोर कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

कस्तुरबा गाँधी आवासीय विद्यालय भारत में महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से स्थापित किए गए हैं। यह विद्यालय कस्तुरबा गाँधी के योजना और सपनों के आधार पर बनाया गया है, जिन्होंने महिला शिक्षा को महत्वपूर्ण माना था। इन विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को शिक्षित बनाना और समृद्धि की ओर अग्रसर करना है।

कस्तुरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों का संचालन विभिन्न भागों में किया जाता है और इनमें महिलाओं को उच्च शिक्षा के लिए योग्य बनाने के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम और सुविघाएँ प्रदान की जाती है। ये विद्यालय भारत के विभिन्न राज्यों में स्थित है और महिलाओं को शिक्षा और सामाजिक समृद्धि के माध्यम से सशक्त बनाने का सार्थक प्रयास है।

कस्तुरबा गाँधी के प्रेरणास्त्रोत पर आधारित इन आवासीय विद्यालयों में शिक्षिका और छात्राएँ गाँधी जी के विचारों और आदर्शो के प्रति समर्पित है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में काम करते हैं। ये विद्यालय महिलाओं के शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**शैक्षिक गुण**

**1. समग्र विकास**-बालिका विद्यालयों में छात्राओं के समग्र विकास को प्राथमिकता दी जाती है, जिसमें शिक्षा के साथ-साथ कौशल और विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रम और गतिविधियाँ शामिल है।

**2. स्त्री शिक्षा का प्रोत्साहन**- इन विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित करना है और छात्राओं को सामाजिक और आर्थिक समर्थन प्रदान करना है।

**3. महिला शिक्षा के प्रति समर्पित शिक्षक**- इन विद्यालयों में छात्राओं को महिला शिक्षा के प्रति उत्साहित करने के लिए समर्पित और पूर्वाग्रही शिक्षक होते हैं।

**शैक्षिक अवगुण**

**1. संकीर्ण विभागिकता**- कुछ बालिका विद्यालयों में संकीर्ण विभागिकता की समस्या हो सकती है, जिससे छात्राओं की सामाजिक और व्यक्तिगत विकास को प्रतिबंधि त किया जा सकता है।

**2. आधारभूत सुविधाओं की कमी**- कुछ विद्यालयों में शिक्षा के लिए आधारभूत सुविधाओं की कमी हो सकती है, जैसे कि विशेषज्ञ शिक्षकों की अभाव या अच्छे पुस्तकालय और शिक्षा संसाधनों की कमी।

**3. सामाजिक समस्याएँ**- कुछ छात्राएँ सामाजिक समस्याओं के बजाय पढ़ाई में ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाइयों का सामना कर सकती है।

कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालयों में छात्राओं के शैक्षिक गुणों और अवगुणों का मूल्यांकन विद्यालय की विशेष स्थितियों पर निर्भर करेगा और यह छात्राओं के स्वयं के प्रयासों पर भी निर्भर करेगा।

कस्तुरबा गाँधी बालिका योजना के अन्तर्गत पिछड़े क्षेत्रों में आवासीय विद्यालयों का निर्माण किया गया इसका नाम कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय रखा गया। इन विद्यालयों का निर्माण उन क्षेत्रों में किया जाता है जो पहले से पिछड़े हो और जहाँ की बालिका की साक्षरता दर बहुत कम हो। इस विद्यालयों में वर्ग 12 तक की शिक्षा मुफ्त दी जाती है और इसके साथ बालिकाओं को रहने के लिए छात्रावास, समय पर भोजन, यूनिफर्म और मुफ्त में पाठ्य-पुस्तकों को भी दिया जाता है। इसके अलावा अन्य जरूरतों को भी पूरा करने के लिए बालिकाओं को प्रतिमाह

छात्रवृति भी दी जाती है। छात्रवृत्ति की रकम बैंक खाते में जमा की जाती है।

कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालयों में कम से कम 5 प्रतिशत सीटें अनुसूचित जाति व जनजाति, पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक वर्गो की बालिकाओं के लिए आरक्षित होती है जबकि शेष 25 प्रतिशत गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करनेवाले सामान्य परिवार की बालिकाओं के लिए आरक्षित होती है।

कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय की शुरूआत एक अलग योजना के साथ सर्व शिक्षा अभियान के साथ सामंजस्य स्थापित करना था जो अप्रैल 2007 से इसे सर्व शिक्षा अभियान में एक अलग घटक के रूप में खत्म कर दिया गया।

**कस्तुरबा गाँधी बालका विद्यालयों की छात्राओं की कुछ आम समस्याएँ :-**

1. **विभिन्न जीवनस्तरों की समस्याएँ**- छात्राएँ विभिन्न सामाजिक अर्थिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से हो सकती है, जिसके कारण उन्हें पढ़ाई में कठिनाइयों का सामना करना पडता है।

**2 शिक्षा की गुणवता**- कुछ बाल बालिका विद्यालयों में शिक्षा की गुणवता का स्तर नीचा हो सकता है, जिससे छात्राओं को उच्च शिक्षा और भविष्य के लिए तैयारी में कठिनाइयों का समाना करना पड़ता है

3. **शैक्षिक संरचना**- शैक्षिक संरचना पाठ्यक्रम और शिक्षण की विधियाँ भी छात्राओं के लिए महत्वपूर्ण होती है। इन बालिका विद्यालयों में अच्छे पाठ्यक्रम और शिक्षा के तरीके की आवश्यकता है।

4. **सामाजिक समर्थन**- कुछ छात्राएँ सामाजिक समर्थन के अभाव में हो सकती है, जो उनकी शैक्षिक सफलता पर असर डाल सकता है।

5. **स्त्री सुरक्षा**- इन विद्यालयों में छात्राओं की सुरक्षा और उनके अधिकारों की सुरक्षा का ध्यान रखना महत्वपूर्ण होता है।

इन समस्याओं का समाधान करने के लिए, शिक्षा निगरानी, शिक्षा का स्तर उन्नत करना, सामाजिक समर्थन प्रदान करना और स्त्री सुरक्षा को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है। बालिकाओं के वर्ग कक्षा शिक्षण में कुछ सामान्य कठिनाइयाँ होती है।

1. **सामाजिक परिपर्णता**- कुछ बालिकाएँ सामाजिक परिपर्णता की वजह से स्कूल जाने में हिचकिचा सकती है, जैसे कि परिवार के कामों में मदद करना या शादी के बाद का आशंका।

2. **शिक्षा की गुणवता**- बालिकाओं के लिए उच्च गुणवता वाली शिक्षा की आवश्यकता होती है, लेकिन कई बार उच्च गुणवता वाली शिक्षा का पहुँच कठिन होता है।

3. **सामाजिक समर्थन की कमी**- कुछ बालिकाएँ परिवार से सामाजिक समर्थ की कमी के कारण पढ़ाई में कठिनाइयों का सामना कर सकती हैं

4. **भाषा की बाधा** - जब शिक्षा के संदर्भ में अच्छी तरह से तकनीकी या शैली से विचार करने के लिए सही भाषा की कमी होती है, तो इससे बाधित हो सकती है।

5. **सुरक्षा मामले**- सुरक्षित शिक्षा उपलब्ध नहीं होने की स्थितियॉ कई बालिकाओं को पढाई से दूर रख सकती है।

6. **बालिकाओं में समग्र विकास**- गुणवतापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि पाठचर्या के साथ-साथ सह पाठचर्या का भी प्रशिक्षण दिया जाय। यह बालिकाओं के व्यक्तिगत विकास एवं आत्म विश्वास बढ़ाने में सहायक होगा।

7. **कस्तुरबा बालिका विद्यालयों की छात्राएँ** में छीजन दर बहुत ज्यादा है क्योकि ये छात्राएँ अलग-अलग अनुभव के साथ-साथ अलग-अलग अधिगम स्तर की होती है इसलिए एक ब्रिज कोर्स का संचालन होना चाहिए ताकि वे राज्य के पाठ्यक्रम को आत्मसात कर सके।

8. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** के अनुसार पाठ्यक्रम में जीवन कौशल शिक्षा होना चाहिए। सभी प्रमुख दस जीवन कौशल जैसे-आत्म जागरूकता सहानुभूति, प्रभावी संचार, पारस्परिक संबंध, महत्वपूर्ण सोच, निर्णय क्षमता, समस्या समाधान, भावनाओं के साथ नकल, तनाव प्रबंधन की पढ़ाई, वर्तमान समय में समाज के अनुरूप होना चाहिए

जो अभी तक अपेक्षित है। करीब दो दशक से संचालित कस्तुरबा बालिका विद्यालय अपने उद्देश्यों को सफलता पूर्वक प्राप्त करने में असफल रहा है। शैक्षिक समस्याओं व प्रशासनिक समस्याओं, शैक्षिक अवगुण को दूर किये बिना कस्तुरबा बालिका विद्यालय अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो सकता।

**निष्कर्ष :**

इन समस्याओं का समाधान करने के लिए सरकार, समाज, और स्कूलों को बालिकाओं के वर्ग कक्षा शिक्षा के लिए समृद्धि के प्रयासों को बढ़ावा देना चाहिए। इसमें सामाजिक समर्थन प्रदान करना सुरक्षित शिक्षा सुनिश्चित करना, और शिक्षा की गुणवत्ता को सुनिश्चित करना शामिल है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :**


1. अवस्थी, प्राची (2007-2008), कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालयों की दिशा एवं दशा- एक आलोचनात्मक अध्ययन,एम.फिल. शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
2. कुमार मयंक (2008), सर्व शिक्षा अभियान में कस्तुरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालयों की भूमिका एवं परिषदीय विद्यालयों की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि से तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध एम. एड. , शिक्षा शास्त्र संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ पृष्ठ सं. 74, 75, 82, 84 ।
3. त्रिपाठी, बृजेन्द्र कुमार (2004), गोण्डा जनपद में कस्तुरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालयों योजना की वर्तमान प्रस्थिति का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, स्कूल ऑफ एजुकेशन, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली पृष्ठ सं. 49-52
4. पाढी़ सम्बित कुमार (2011), कस्तुरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय एक अध्ययन, संन्दर्भ (वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य), वर्ष 1, अंक 1, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 46-51।
5. त्रिपाठी शालिनी (2011-12), बालिका शिक्षा के उन्नयन में कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय की भूमिका: एक समीक्षात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध (एम.एड.), शिक्षण शिक्षा संकाय, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, कोटवां जमुनीपुर, इलाहाबाद, पृष्ठ सं. 1-59।
6. जैन अनिल कुमार (2014), सीमान्त वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण में कस्तुरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय की भूमिका का मूल्यांकन का अध्ययन, शोध पत्र, जर्नल, (परिप्रेक्ष्य शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक आर्थिक संदर्भ), वर्ष 1, अंक 2, राष्ट्रीय योजना और प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, पृष्ठ. सं. 71-72।
7. सेंसस 2011 भारत सरकार, नयी दिल्ली
8. के.जी.बी.वी. एजुकेशन फॉर ऑल www.upefa.com
9. Bihar Education Project Council (2021) state component plan Document, BEPC, Patna
10. Planning Evaluation organisation (2020), Evaluation Study on KGBV, Niti Aayog, Govt. of India, New Delhi.
11. National Evaluation report (2021), Evaluation of IGBV, SSA, Govt. of India, New Delhi.


❖❖❖